

## लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ University of Lucknow, Lucknow

### Press Note 12 April 2020

In the fight against SARS-COVID19, University of Lucknow has been proving to be at the forefront. The University has excelled both in innovation to fight the disease and in its community outreach endeavours. In the same context, a Professor at the Department of Linguistics at the University has ensured that communities residing in remote areas of northern India are also aware of the danger imposed by COVID19. Prof. Kavita Rastogi of University of Lucknow with the team of her NGO Society for Endangered and Lesser Known Languages has translated COVID19 information, precaution pamphlets into 29 indigenous and endangered languages of Uttarakhand, Uttar Pradesh, Jharkhand, Chhattisgarh, Bihar, Assam and Meghalaya. She has been working tirelessly with activists of the communities speaking these various languages, one of which is the language of the last hunting and gathering tribe of the Indian subcontinent, and making this translated material available to the community members. Prof. Rastogi informed that while work in these languages including Awadhi, Bhojpuri, Liangmai, Paite, Karbi, etc. has been completed, she and her team are now working on including more languages from the north-eastern and western states, as well as preparing informative videos in all these languages for quick circulation via social media apps like whatsapp, etc.

### प्रेस विज्ञप्ति

SARS-COVID19 के खिलाफ चल रही लड़ाई में आम इंसान को शक्ति बनाने की लखनऊ विश्वविद्यालय की मुहिम में आज भाषा विज्ञान विभाग की एक प्राध्यापिका ने एक कदम और बढ़ाया है। प्रो कविता रस्तोगी ने अपने NGO सोसाइटी फॉर एंडेन्जेर्ड एंड लैसर नोन लैंग्वेजेज की टीम के साथ मिलकर भारत सरकार द्वारा दिये गए कोरोना वायरस से बचने के उपाय व अन्य सूचना उत्तरी भारत के 15 क्षेत्रीय और लुसप्राय भाषाओं में अनुवादित किया है। यह 29 भाषाएँ उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, असम और मेघालय के विभिन्न प्रान्तों में बोली जाती है। प्रो रस्तोगी ने बताया कि क्षेत्रीय और लुसप्राय भाषा बोलने वाले समुदाय के लोगो को covid19 के विषय में उन्ही की भाषा में सूचना पहुंचाना अति आवश्यक है क्योंकि यह समस्या बहुत ही ज्यादा गंभीर है और इसके खिलाफ सबसे बड़ा हथियार इन्फॉर्मेशन ही है। प्रो रस्तोगी अवधि, भोजपुरी, कुमाऊनी, गढ़वाली आदि भाषाओं के समुदायों के साथ काम करने वाले लोगो से संपर्क में हैं और इस कोशिश में कार्यरत है कि कितनी जल्दी इन सभी समुदायों के लोगो तक COVID19 से लड़ने और बचने के विषय में सूचना पहुंचाई जा सके। प्रो रस्तोगी ने यह भी बताया कि जब कि 29 भाषाओं में काम पूरा हो चुका है, पूर्वोत्तर और पश्चिमी भारत की क्षेत्रीय भाषाओं पर काम अभी वे और उनकी टीम कर रही है। साथ ही प्रो रस्तोगी ने बताया कि इन सभी भाषाओं में वे छोटे छोटे वीडियो भी तैयार कर रही है ताकि व्हात्सप्प जैसे माध्यम से कोरोना से सुरक्षित रहने की जानकारी जल्दी और आसानी से लोगो में फैलाई जा सके।